हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श

सौ. अमिता प्रशांत कारंडे
शोधछात्र- डी. बी.जे महाविद्यालय,
मोबाइल नं - 8888553198
ई - मेल - apkarande 87@ gmail.com

शोध आलेख का सारांश -

साहित्य में भी पर्यावरण से संबंधित बातों का वर्णन हो रहा है। हिंदी साहित्य में तो अनेक प्रकार के विमर्शको वर्णित किया गया है जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि अनेक विमर्श में से एक विमर्श हैं पर्यावरणीय विमर्श। हिंदी साहित्य अन्य साहित्य के तरह पर्यावरणीय बातों का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में भी पर्यावरणसे संबंधित अनेक उपन्यास, कहानी कविताएँ, यात्रा साहित्य, निबंध आदि अनेक प्रकार का साहित्य लिखा गया है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरणसे संबधित साहित्य आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्राप्त होता है। हिंदी साहित्य के आदिकाल के कवि विद्यापति की पदावली में प्रकृति का वर्णन आया हुआ है.

बीज शब्द - पर्यावरण, प्रकृति, मनुष्य, साहित्य, कवि आदि।

प्रस्तावना -

पर्यावरण हवा, पानी, पेड़, पौधे, मिट्टी आदि चीजों पर्यावरण बनता है।यह सभी चीजें मनुष्य के लिए उपयोगी है।इन सब चीजों के सिवा मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं है लेकिन मनुष्य आजकल अपने स्वार्थ के लिए पर्यावरण या प्रकृति के साथ खिलवाड कर रहा है। जैसे- बड़ी –बड़ी इमारते बनवाने के लिए जंगलोंको काटना, कंपनीयों के धुओं के कारण हवा प्रदूषित कर रहा है।कारखानों का गंधा पानी नदियों में छोड़कर नदी का पानी अशुद्ध करना। आज के इस भू मंडलीकरण के दौर में मानव ने पर्यावरण को कुचल रहा है। विकास के नाम पर वनोंको काटना, नदियों की गति और दिशा में मन चाहा परिवर्तन करना, खनिज उत्खनन करना, औदयोगिकीकरण और शहरीकरण करना, जैव विविधता का –हास करना आदि सभी मनुष्य कर रहा है।

साहित्य में भी पर्यावरण से संबंधित बातों का वर्णन हो रहा है। हिंदी साहित्य में तो अनेक प्रकार के विमर्शको वर्णित किया गया है जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि अनेक विमर्श में से एक विमर्श हैं पर्यावरणीय विमर्श। हिंदी साहित्य अन्य साहित्य के तरह पर्यावरणीय बातों का वर्णन किया है। हिंदी साहित्य में भी पर्यावरणसे संबंधित अनेक उपन्यास, कहानी कविताएँ, यात्रा साहित्य, निबंध आदि अनेक प्रकार का साहित्य लिखा गया है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरणसे संबधित साहित्य आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्राप्त होता है। हिंदी साहित्य के आदिकाल के कवि विद्यापति की पदावली में प्रकृति का वर्णन आया हुआ है.

मौलीर साल मुकुल भेल ताब
समुखहिंको किल पंचम गाय।

हिंदी साहित्य के भक्ति कालमें अनेक कवियोंने प्रकृतिसे संबंधित अनेक जग हों पर वर्णन किया हुआ है। इन कवियोंमें प्रमुख रूप से कबीर सूर, तुलसीजी जायसी आदि प्रमुख कवि है। इन में से तुलसीदासने रामचरित मानस में सीता और लक्ष्मण को वृक्षारोपण करते हुए दिखाया है -

तुलसी तरुवर विविध सुहारा
कहुँ कहुँ सियाक हुँल खन लगाएं।

हिंदी साहित्य के भक्ति काल के बाद रीति काल आता है इस रीतिकाल में भी बिहारी, पदमाकर, देव, सेनापतिने प्रकृति का एक मनमोहक चित्रण अपने काव्यों में किया हुआ है।बिहारी जी एक दोहा जिसमें प्रकृतिका चित्रण आया है

चुवत स्वेद मकरंद कनतरु, तर, तरू विस्माय।
आवत दक्षिण देश तेथक्यों बटो ही बाय।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अनेक कवियोंने प्रकृतिके अनेक रूपोंका वर्णन किया है । कहीं जगहोंपर प्रकृति की सुंदरता के साथ – साथ कठोर रूपका भी चित्रण किया गया है।

आधुनिक काल के कवि मैथिली शरण गुप्तजीने उनके 'साकेत' उपन्यास में प्रकृतिका मन मुग्ध करनेवाला चित्रण करते हुए कहा है कि–

चारूचंद की चंचल किरणें
खेल रही है जल थल में
स्वच्छा चांदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में

हिंदी साहित्य के छायावादी कवियोंमें प्रमुख कवि सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, और जयशंकर प्रसादजीने अपने साहित्य में प्रकृति का चित्रण हर जग हों पर पाया जाता है ।इतना ही नहीं सुमित्रानंदन पंतजी को तो हिंदी साहित्य में प्रकृतिके 'सुकुमार कवि' माना गया है क्योंकि पंतजीने अपने साहित्य में प्रकृतिका वर्णन अत्यंत, सुंदरता से किया है। सुमित्रानंदन पंतजीने अपनी कविताओं के माध्यमसे मानव और प्रकृतिका तादात्म किया है ।पंतजी अपनी "नौका विहार' नामक कविता में गंगा नदी की धारा एक शांत बालिका की लेटी हुई है छबी लगती है इस प्रकार का वर्णन किया है।

सैकत शैय्या पर दुग्धधवल, तन्वंगी,
गंगा, ग्रीष्म, विकल
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल।
गोरे अंगोंपर सिहर-सिहरलहराता तार
तरल सुन्दर
चंचल अंचल सा निलाम्बर।

छायावाद के चार आधास्तंभों में से जयशंकर प्रसादजीने प्रकृतिके रौद्ररूप का चित्रण अपने 'कामायनी 'उपन्यास में किया है

हिमगिरि के उत्तुंग शिखरपर
एक बैठा शिला की शीतल छाह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह

कामायनी' 'इस उपन्यास में जयशंकर प्रसादजीने प्रकृति में जब जलप्रलय आया था तब प्रकृतिका विनाशकारी रूप यहाँ दिखाया है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के कवि केदारनाथ सिंह' जीने अपने साहित्य में मानव के कारण प्रकृति में प्रदूषण बढ़ रहा है। इस बढ़ते प्रदूषण का चित्रण अपनी कविता "पानी की प्रार्थना ' में किया गया है-

पर यहां पृथ्वी पर मैं
यानी अपना मुह लना पानी,
अब दुर्लम होने के कगार तक पहुँच चुका हूं,
परचिंता की कोई बात नहीं
यह बाज़ारों बाजारों का समय है,
और वहां किसी रहस्यमय
स्त्रोत से मैं हमेशा मौजूद हूं।

इस कविता में केदारनाथ जीने पानी के कारण पूंजीपति लोग और सत्ताधारी लोग पानी के माध्यम से किस प्रकार राजनितिका माध्यम बनाते है इस का वर्णन किया है।

डॉ.रामकुमार वर्माजीने भी अपने काव्योंमें प्रकृतिको विशेष महत्व दिया गया है ।डॉ.रामकुमार वर्माजीने 'रूप, साम्प इस कविता में सागर का वर्णन किया है-

निशि में जब तम काथा प्रसार,
खद्योत उडेथे, तीन चार,
तक-सागर में डूब रहा,
संसार लिए निज नींद-भार।

डॉ.रामकुमार वर्माजी सिर्फ सागर काही वर्णन अपने काव्य नहीं किया तो नदी, पर्वत, तालाब आदि का भी किया है।

जैनेंद्रकुमार जी की 'तत्सत' "यह कहानी एक प्रतीकात्मक कहानी है। इस कहानी में जैनेंद्रकुमार जीने बताया है कि पेड़-पौधे, पशु-पंछी और मनुष्य हर एक का अपने जगह पर अपना-अपना अलग का महत्व होता है यह बताया है। 'महत्वाकांक्षा और लोभ' पुन्नालाल बख्शीजीने इस निबंध में एक मछुवा और का मछुवी का वर्णन किया है। मछली किस प्रकार अपनी मदत के लिए मछुवा को बुलाती है । मछुवा उसकी मदत करता है बदले में मछली उसकी सभी इच्छाओं को पूरा करती है इस निबंध में इस का वर्णन किया है।

'ओजोन विघटन का संकट इस विज्ञान संबंधी लेख में डॉ.कृष्ण कुमार मिश्रजी केने बताया है कि मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड करने के कारण पृथ्वी के आसपास होनेवाली ओ जोन की परत को धीरे-धीरे छेद हो रहे है यह बताया है।

डॉ.मुकेश गौतम जीने 'पेड़ होने का अर्थ इस कविता में कहा है कि आद मी पेड़ जितना बड़ा कभी नहीं बन सकता क्योंकि पेड़ हमें जितना देता है उतना मनुष्य कभी नहीं दे सकता। पेड़ किस प्रकार हालात से लड़ता है यह बताया है।

जब तक है उसमें सास
एक जगह पर खड़े रहकर
हालात से लड़ता है।

पेड़ किसी से भीडरता नहीं है, किसी के पैर पड़ता नहीं उसके पास बहुत हौसला होता है यह बताया है।

निष्कर्ष –

इस प्रकार हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारोंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रकृतिके अनेक रूपों का वर्णन किया है। इस में मनुष्या ने प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ किया है इसका भी वर्णन किया है तथा के सुंदरता का वर्णन भी अनेक साहित्य में प्रकृति मिलता है। प्रकृति के सिवा साहित्य अधुरा होता है इसलिए साहित्य में प्रकृति का होना ज़रूरी होता है।

संदर्भग्रंथ-

1) पर्यावरण संबंधी जानकारी google का संदर्भ.
2) साकेत – मैथिली शरणगुप्त प्रकाशन- साहित्य सदन, चिरगांव झाँसी सितंबर,25, 2005
3) कामायनी – जयशंकर प्रसाद - प्रकाशन-डायमंड पॉकेट बुक्स, प्रस्तुत संस्करण जनवरी 2006 पृष्ठ क्र.2
4) http:|| kavitakosh.org.
5) कक्षा 12 वी का पाठ्य पुस्तक- महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती
मंडळ आवृत्ति 2020 पृष्ठ क्र. 36,37,51,52
6) कक्षा 11वी का पाठ्य पुस्तक -महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
आवृति – 2019 पृष्ठ क्र. 40,41